अग्नि परीक्षा

Mohammed Kutty P., III Chemistry

परीक्षा खतम हुई। नसीर रेलगाडी में घर जा रहा है। उसके चेहरे पर खुशी की चमक है। बीच बीच में संतोष की आभा उसके चेहरे से मिट जाती है और उसके स्थान पर चिंता की रेखाएँ व्यक्त होती ह। पिछले पाँच वर्षों से वह अपने हृदय में जिस रूप की प्रतिष्ठा कर पूजा करता आ रहा था उससे दूर होता जा रहा है। चामिया! जिसके स्मरण मात्र से नसीर हर्षपुलकित हो जाता है। लेकिन वियोग के बारे में सोचकर उसका चेहरा यकायक मुर्झा जाता है। उसने चमिया को वचन दिया था —

" इस जिन्दगी में मैं शादी करूँ तो तुझसे ही करूँगा। तेरे बिना मेरा जीवन अधूरा ही रहेगा। " इसके जवाब में वह कुछ न बोली। वियोग की उस वेला में केवल रोती रही।

रेलगाडी स्टेशन पर रुकी। लेकिन नसीर का मन अब भी विचारों से मुक्त नहीं हुआ था। 'प्लैटफाम' से किसीने पुकारा —

" नसीर! नसीर!

नसीर ने मुडकर देखा। पिताजी हैं। गाडी से जल्दी उतरने को कह रहे हैं। तभी मालूम हुआ कि गाडी उसके गाँव के स्टेशन पर खडी है।

पिता ने परीक्षा के बारे में पूछा, अध्यापकों का खुशहाल पूछा, मित्रों के बारे में पूछा। तब पिताजी के सामने चामिया की याद कर नसीर को रुलाई आयी। वह सोचने लगा —

'पिताजी कभी भी मेरे प्रेम को पुष्पित होने नहीं देंगे।'

घर में भी नसीर बहुत कम बोलने लगा। वह हमेशा स्वप्नलोक में था। कुछ सोचता था, कुछ गुनगुनाता था। माँ बाप ने सोचा कि बेटा परीक्षा की रिज़ल्ट के बारे में सोचकर व्याकुल होता है। नसीर को भी किसी से कुछ कहने का साहस नहीं हुआ।

एक दिन संध्या का समय था। नसीर एक पत्रिका पढ रहा था। तब माता ने आकर कहा — " सुनो, तुम्हें पिताजी बुलाते हैं, जाकर मिलो, कोई खास बात है। "

पिता के पास जाकर वह चुपचाप खडा रहा। पिताजी धीमी आवाज़ में कहने लगे —

" बेटे, अब तुम्हारी पढाई खतम हो गयी है। भविष्य के बारे में सोचने का समय आया है।

" तो पिताजी मुझे क्या करना चाहिए " नसीर ने बात काटकर पूछा।

" सुनो मैं वही कहने जा रहा हूँ। हमारी घर की हालत तुमको अच्छी तरह मालूम है। लडकी की शादी में अब देरी करना अच्छा नहीं होगा। मुहल्ले के सेठ हमीद से रुपया लेकर ही मैं ने तुझे पढाया था। लडकी की शादी केलिए मेरे पास एक पै भी नहीं है। यदि हमीद की बेटी से तेरी शादी हो जाए तो वे पैसा मांगेंगे ही नहीं बल्कि, हमारी लडकी की शादी कराने केलिए पैसा देंगे भी। मै ने इसलिए सेठ हमीद को वचन दिया है कि ऐसा ही होगा। "

पिताजी की बातें सुनकर नसीर को चक्कर आने लगा। वह पिताजी से कैसे कहे कि उस

का दिल आज उसके पास नहीं है। थोडी देर के बाद उसने कोशिश कर इतना कहा — "पिताजी, मै यह शादी नहीं कर सकता। क्योंकि मै ने एक लडकी को वचन दिया है कि शादी करूँ तो उससे ही करूँ"।

"क्या कहा", पिताजी गरजने लगे। पिताजी बोलते ही रहे, हमीद ने कुछ न सुना। उसको अच्छी तरह मालूम था कि पिताजी उस की बात मानेंगे नहीं। आँखों के सामने अपनी अभिलाषाओं की अरथी उसने देखी।

दो तीन दिन बीत गये। सेठ हमीद एक दो बार घर आये। पिताजी और हमीद के बीच शादी के बारे में बातें होती थीं। नसीर को मालूम हुआ कि उसकी शादी का दिन भी निश्चित हो चुका है।

नसीर हमेशा चिंता में पड गया।

"क्या करना चाहिए? चामिया को छोड्डूँ?"

किसी दूसरी लडकी से शादी करने के संबंध में वह सोच भी नहीं सकता था। लेकिन अब क्या कर सकता है?

"आत्माहत्या करूँ? नहीं, वह बेवकूफी है। मै चामिया को नहीं छोड सकता। तब पिताजी को छोड सकता हूँ? नहीं, क्योंकि बडे प्यार से उन्होंने मुझे पाला। मेरी भलाई चाह कर ही वे यह सब कर रहे हैं। लेकिन वे यह नहीं सोच सकते कि इस शादी से मेरी जिन्दगी बरबाद हो जाएगी।

शादी केलिए सिर्फ एक ही हफता बाकी था। निशा की निशब्दता में नसीर घर बार सब छोडकर निकला। सब बन्धनों से मुक्त होकर बहुत दूर जाने का इरादा था। वह सोचने लगा —

"मैं पैसा कमाऊँगा, हमीद का कर्ज चुकाने केलिए, बहन की शादी कराने केलिए और यदि चामिया मेरी प्रतीक्षा में बैठेगी तो हम दोनों केलिए।" अन्धकार से प्रभात की ओर वह चला गया।

जिन्दगी एक सफर

Mohamed A. — II Economics.

ऊँची आवाज़ करती हुई गाडी स्टेशन पर रुक गयी। लोग उतरने लगे। नीचे उतरने में बडी कठिनाई थी। क्यों कि दरवाजे पर कुछ बदमाश खडे थे। किसी न किसी प्रकार बच्ची को लेकर मैं डिब्बे से बाहर आया।

स्टेशन से बाहर आया तो मालूम हुआ कि वे पुरानी सडकें बदल गयी हैं। इन दस वर्षों में गाँव का मुखडा ही बदल गया है। कोई परिचित चेहरा देखने को नहीं मिला। मैं आगे बढा।

एक दूकान की ओर देखकर बच्ची बोली—
"पिताजी, पुतली देखिए, मुझे पुतली
चाहिए।"
"पुतली खरीद कर दूँ तो उसे क्या
दोगी?"
"दूध दूँगी, खिलाऊँगी, नाचना
सिखाऊँगी"— सिर
हिलाकर, मेरे गले में पकडकर वह
बोलने लगी।
पुतली मिली तो मुन्नी की खुशी की
सीमा न रही।

"भाई, रुको, रुको मैं आता हूँ" — दौड कर मेरी तरफ आने वाला वह मनुष्य मेरा छोटा भाई ही था। मुझे देख कर उसकी आँखें आश्चर्य और सन्तोष से चमक उठीं। दस साल बाद दो भाइयों का मिलन। मेरी छाती पर शोभित होने वाली बच्ची पर उसकी नज़र पडी। घर से भाग निकलते समय मैं अकेला ही था। भाई को शायद नहीं मालूम हुआ कि यह मेरी आपनी बच्ची है।

पुतली के मिलने पर मुन्नी अपने को भी भूल बैठी है। वह उसे चूमती है; उससे बातें करती है। मुझे हँसी आयी, जब उसने पुतली से वादा किया कि उसकी माता दोंनों को मिठाई देगी। उसको नहीं मालूम कि उसकी माता आज इस दुनिया में नहीं है। कहना चाहा; मगर आवाज़ गले में रुक गयी।

मन में स्मरणाओं का ज्वार ही होने लगा। दस साल पहले की बात है। बाप ने दूसरी शादी की थी। एक काली-कलूटी मोटी औरत। बात बात पर नाराज़ होती थी। मुझे उससे डर था। बाप उसकी उँगली के इशारे पर नाचने लगे। घर पर उसका शासन होने लगा। मेरी माताजी सादा रोती रहती थी। वे एक नौकरानी की तरह घर में पडी रहीं। मुझे घर एक जेल सा मालूम होने लगा। एक रात में मैं घर से निकला। कहीं दूर जाने का इरादा था।

जाते समय मन में आशा थी कि कहीं नौकरी मिलेगी। क्यों कि 'बीकोम' की उपाधि मेरे पास थी। एक बडा शहर। दो हफ्ते तक मारा मारा फिरा। भूख और प्यास सताने लगी तो माँ की याद आने लगी। थकावट बढी तो खुदा की याद की। कहीं भी आश्वास का दरवाजा नहीं दीख पडा। आखिर आशाओं की लाश लेकर लौटने का निश्चय किया। एक मित्रने कहा — "कासिम, अब तुम मत जाओ। मेरे साथ रहो। दो तीन दिनों के अन्दर व्यवस्था हो जाएगी।"

आखिर उसके प्रयत्न से एक दफ्तर में मुझे नौकरी मिली।

जिन्दगी का एक मोड था। मित्र के साथ 'लाड्ज' में रहने का प्रबन्ध हुआ। रोज़ पाँच बजे के बाद मित्र एक क्लब में जाते थे। मैं अकेला, कमरे में ही समय बिताता था।

मेरे 'लाड्ज' के सामने रोज़ एक चमार बैठकर काम करता था। चमडे पर अपनी हस्तकला दिखाने में वह हमेशा दत्तचित्त था। दुबला पतला वह गरीब बूढा सदा कुछ गुन-गुनाता और काम में लीन रहता था। मैं घंटों उसकी ओर देखता रहता था।

वह एक सोमवार था। हमें दोपहर की छुट्टी मिली थी। लाड्ज की तरफ आते समय देखा कि एक खूबसूरत किशोरी नल से पानी भर रही है। उसके भाल पर सुन्दर टीका और केश पर फूल हैं। ऐसा लगा की उसकी आँखें कोई दुख-कथा कह रही हैं। मैं ने पूछा —

"थोडा पानी दोगी"?

"प्यास है?"

"हाँ प्यास है, दे सकती हो?"

मुस्कुराती हुई वह बोली — "मैं पिताजी के लिए पानी भर रही हूँ। उस लाड्ज के सामने एक चमार बैठा है न? वे मेरे बाप हैं।"

फिर निर्झर की तरह हँसते हँसते वह पानी का बर्तन उठा कर धीरे धीरे चल पडी।

एक हफ्ते के बाद मैं ने उसी नल के पास उसको पाया। पूछा —

"पानी पिलाओगी?"

"मैं चमार की बेटी हूँ, मुझसे पानी पिओगे?"

"क्या चमार मनुष्य नहीं होता?"

"मेरे हाथों से पानी पीकर आप की प्यास बुझेगी?"

"एक बार पिलाओ, तब देखूँ।"

उसने मुझे पानी पिलाया। इतना अच्छा पानी मैं ने जिन्दगी भर नहीं पिया था। उसकी आँखों में आँखें डालकर मैं ने पूछा —

"रोज़ इस प्रकार पानी पिलाओगी?"

एक हरिणी की तेजी से वह चली गयी। मैं ने देखा, वह हँस रही थी।

उसकी आवाज़, उसकी चाल, उसकी छवि सब मेरे मन में प्रतिष्ठित हो गयीं। मेरा मन भी शायद उसके पीछे दौड गया। एक दिन मैं ने सपने में उससे बातें कीं। दोस्त ने सब सुन लीं। उसने अगले दिन सबेरे ही पूछा —

"यह बीमारी कब से हुई?"

"क्या, मैं तो बीमार नहीं; देखो मेरा हृष्टपुष्ट शरीर।"

"शरीर तो ठीक है, तुम्हारा दिल बीमार सा लगता है।"

"............"

"बोलो दोस्त, तुम उस चमार की बेटी से प्रेम करते हो न?"

"ठीक है"

"ठीक है तो शादी करना। नहीं तो, आराम हराम हो जाएगा। जल्दी काम कर।" दोस्त का उपदेश था। मै ने स्वीकार किया।

अपनी बेटी के गले में माला डालते देख कर उस बूढे चमार के नयनों से संतोष के आँसू निकले। पर विधि ने मेरे दाम्पत्य पर घोर आघात किया। मेरी इस बच्ची को मुझे सौंप कर मेरी प्रिया ने सदा के लिए आँखे बन्द कर लीं।

"माँ, भाई आ गये हैं। आंगन में खडे होकर छोटा भाई कह रहा था। तभी पता चला कि मैं अपने घर पहुँच गया हूँ। दुबली पतली एक बुढिया घर के भीतर से रोती हुई आयी, मानों वे मेरी ही प्रतीक्षा कर रही थीं। उन्होंने मुझे अपनी बाहों में बाँध लिया। मेरी आँखों से आँसू की दो बूँदें उनके चरणों पर गिर पडीं। मैं इतना बोल सका —

"माँ! मेरी माँ"।

जय बंगला

J. T. Subramanian, II Economics.

कोटि कोटि कंठों में गूँजे
आज यही स्वरधारा है,
'जय बंगला', 'जय मुजीब की',
बंगला देश स्वतंत्र हुआ।

स्वतंत्रता की जनाभिलाषा
सैनिक शासन की निष्ठुरता
दोनों के बीच युद्ध हुआ
बंगला देश का जन्म हुआ।

अधर्म का शासन न चला
अनीति का दिन बीत गया
बंदी बंगला मुक्त हुई
पाकिस्तान का कुछ न चला।

कोटि कोटि कंठों में गूँजे
आज यही स्वरधारा है,
'जय बंगला', जय मुजीब की,
बंगला देश स्वतंत्र हुआ।

मुझे जाने दे

P. Ibrahim, III Botany.

कलालय! मेरी माँ है तू,
पाँच वर्ष मेरा पालन किया
अब देखता हूँ, भरे नयनों से
जाने दे मुझे, आशीर्वाद!

है माँ, तू बडी सुन्दर है
तेरा मन बहुत विशाल है
पौधे तेरे वस्त्र निराले,
फूल है तेरा मुस्काना।

चला मैं तेरी आत्मा में
मिले मुझे कुछ अमूल्य धन
छिपे हैं वे सब मेरे मन में
वे हीं हैं मेरे जीवनसाथी।

जब मैं तेरी गोदी में था
दुखों से भयभीत नहीं था
अब दुख की दुनिया जाता हूँ
शक्ति दे माँ, मुझे आशीर्वाद!

माँ, धीरे-धीरे तू आगे बढ
करता हूँ प्रार्थना तेरी वृद्धि की
तेरी प्रगति में मेरी खुशी है
तू दीर्घायु बने, मेरी अभिलाषा है।

विधि

V. Sivadasan — II Economics

कई दिनों से आसमान मेघाच्छादित था। दो तीन दिनों से सूरज की किरणें भी देखने को नहीं मिलती थीं। पानी की बूँदें अब भी इधर उधर गिर रही हैं।

गाँव की एक झोंपडी। द्वार पर एक लडकी बैठी है। शायद बारह-तेरह साल की होगी वह। किसी की प्रतीक्षा कर रही है। स्वयं वह रूप एक दुख-कहानी सा लगता है। उसका नाम हैं राधा।

थोडी देर बाद करीब दस साल का एक बच्चा वहाँ आ गया। उसे देख कर राधा ने पूछा —

"वेणू आज कितना मिला"।

"बहुत कम"

"तब चावल नहीं लाये?"

"चावल है, लेकिन कल के लिए चना नहीं खरीद सका।

राधा और वेणू भाई-बहन हैं। झोंपडी में उनके अलावा और कोई नहीं। दिन में बाज़ार में वेणू चना बेचने जाता है। इस से जो लाभ मिलता है उस पर उन दो प्राणियों को गुजरना पडता है। दिन में एक बार भी उनकी भूख नहीं मिटती। दोनों इतने दुर्बल और क्षीन है कि भिखारियों को भी उन पर दया आती थी।

झोंपडी के द्वार पर बैठ कर वे दोनों कल के बारे में सोचने लगे। वेणू ने कहा — "बोलो, कल के लिए चना नहीं है तो चावल कैसे खरीदेंगे?"

राधा को रुलाई आयी। तब वेणू ने पूछा —

"क्या मैं भीख मांगने जाऊँ"

"नहीं भैया" राधा फूट फूट कर रोने लगी।

इतने में एक आदमी उस झोंपडी की ओर आया। उसका वेश एक साधू का जैसा था। आगन्तुक को देखकर बच्चों के मन में न जाने क्यों एक विचित्र प्रकार की अनुभूति उत्पन्न हुई।

वेणू ने पूछा —

"आपको क्या चाहिए"

आगन्तुक चुप रहा।

वेणू ने कहा —

"हमारे पास पैसा नहीं हैं, हम बहुत गरीब हैं, आप जाइए यहाँ से।"

आगन्तुक फिर भी चुप रहा।

वेणू ने उस विचित्र मनुष्य के पास जाकर देखा तो मालूम हुआ कि वह रो रहा है। वेणू को भी दुख हुआ। उसने पूछा —

"बाबा, रोते क्यों हैं?"

आगन्तुक ने कहा — "बच्चो, मैं एक बडा पापी हूँ। मेरे दो बच्चे थे। तुम्हारे जैसे दो बच्चे। मैंने उनको और उनकी माता को छोड दिया था। आज उन कलेजे के टुकडों की याद आयी। इसलिए दुख हुआ।

यह सुनकर राधा ने प्रश्न किया —

"आपके बच्चे अब कहाँ है?"

आगन्तुक थोडी देर केलिए चुप रहा। राधा ने जब प्रश्न दोहराया तो उसने रुक रुक कर कहा —

वे दोनों अब मेरे सामने ही हैं, इतना कहकर वह विचित्र मनुष्य दोनों बच्चों को गले से लगाने लगे।

बच्चों को कुछ नहीं मालूम हुआ। आगन्तुक ने समझाकर कहा — "तुम्हारी माता का नाम जानू था न? वह मेरी पत्नी थी।"

उसने आँसू पोंछते हुए कहा —

"मैं तुम्हारा बाप हूँ। पापी हूँ। आठ साल पहले मैं तुम सबको छोडकर गया था। मैं ने ऐसा क्यों किया, इस सम्बन्ध में तुमसे कहना ठीक नहीं होगा। यदि मैं नहीं कहूँ तो भी तुम बुरा मानोगे।"

इतना कहकर वह मनुष्य थोडी देर केलिए चुप रहा। फिर अनमना होकर कहने लगा।

"वेणू के जन्म के दो साल बाद एक दिन अचानक मेरी तबियत बिगड गयी। पास के अस्पताल में गया। जानू ने कहा कि डाक्टर अच्छे नहीं, और कहीं जाएँगे। मै ने न माना। डाक्टर ने मेरे शरीर की जाँच की और कहा —

"आप सख्त बीमार हैं, आप आजीवन निस्सन्तान रहेंगे। आप जल्दी मर जाएँगे।"

मैं ने कहा कि मेरे दो बच्चे हैं।

तब डाक्टर ने कहा — "बच्चे आपके नहीं हो सकते। आप की बीमारी कुछ ऐसी है।"

अस्पताल से एक दूसरा आदमी बनके ही मैं घर आया। मैं विश्वास करने लगा कि जानू ने मुझे धोखा दिया है। ये दोनों बच्चे मेरे नहीं हैं। बीच बीच में मेरे और जानू के बीच झगडा होने लगा। आखिर हमारा संबंध इतना बिगड गया कि एक रात को सब को छोडकर मैं घर से निकला। काश्मीर, काशी, कुरुक्षेत्र सब जगह घूमा। परसों मद्रास में उस डाक्टर से मिल सका जिसने मेरी जिन्दगी बरबाद की थी। उसने कहा —

"क्षमा कीजिएगा। मैं ने जानू और आप के जीवन बरबाद किये। मैं पहले से जानू को जानता था। बचपन से उसे चाहता था। विद्यार्थी जीवन की बात है; एक बार मैं ने जानू से प्रेम की प्रार्थना की। जानू ने उसका तिरस्कार किया तो मेरे दिल पर गहरी चोट लगी। तब से मैं जानू को किसी न किसी प्रकार सताना चाहता था। इसलिए जब आप बीमार होकर मेरे पास आये तो आप के दाम्पत्य पर मैं तीक्ष्ण आधाथ कर सका। मैं अपने यत्न में सफल हुआ। आप जानू और बच्चों को छोडकर चले गये। लेकिन जानू यह दुख सह नहीं सकी। एक साल पहले वह इस दुनियाँ से चल बसी।"

"मेरे बच्चे!" मैं ने पूछा

"वे आपके घर पर होंगे" डाक्टर ने कहा

फिर मैं कुछ कह न सका, कुछ सुन न सका। स्टेशन की ओर दौडा। अब मैं तुम्हारे सामने हूँ। विधि ने मेरी जानू को मुझ से छीन लिया। लेकिन अब तुम दोनों को मुझसे कोई नहीं छीन सकेगा।

तीनों की आँखों से आंसू का धारा प्रवाह ही हुआ। कौन कह सकता है कि वे आँसू संतोष के थे या दुख के।

विज्ञान वरदान है या अभिशाप ?

P. S. Ramanathan — II B. Com.

मनुष्य को इस पृथ्वी पर आये लाखों वर्ष हुए। लेकिन विज्ञान के क्षेत्र में पिछली दो शताब्दियों में ही उसकी आश्चर्यजनक प्रगति हुई है। मनुष्य की इस वैज्ञानिक उन्नति ने संसार में एक नये युग को जन्म दिया है। आज से पन्द्रह वर्ष पहले तक मनुष्य को चन्द्रमा पर भेजने की बात केवल एक सुन्दर कल्पना थी। लेकिन आज वह सपना याथार्थ्य बन गया है। ग्रहान्तरों की यात्रा करने वाला आधुनिक मनुष्य विश्व का महाश्चर्य बन गया है।

यह विज्ञान का ज़माना है। आधुनिक युग में मानवजाति को विज्ञान से कई सुविधाएँ मिली हैं। विज्ञान के कारण प्राकृतिक शक्तियाँ आज मनुष्य की आज्ञाकारी बन गयी हैं। पहले सब काम मनुष्य को अपने हाथों से करना पडता था। किन्तु आज उसका काम मशीनें करती हैं। आजकल की वाहन, तार, बेतार के तार, टेलीफोन, रेडियो आदि वैज्ञानिक उपलब्धियाँ सामान्य लोगों तक को प्राप्त हैं। पनडुब्बी, रोकेट, रोबाट आदि आधुनिक विज्ञान के चमत्कार हैं। ऊंचे महलों के ऊपर के मंजिलों पर चढने पर जवान आदमी भी हाँफने लगते हैं। लेकिन आज वह 'लिफ्ट' पर एक मिनिट के अन्दर हज़ारों फूट ऊंचाई पर चढ सकता है। विज्ञान से ही फोटो, ग्रामफोन, टेलिविशन आदि का उदय हुआ है। इससे शिक्षा का प्रसार सुगम हो गया है। वैज्ञानिक ढंग से खेती करने से पैदावर बढ जाती है। पदार्थविज्ञान ने अनेक औषधियों को जन्म दिया है। एक्सकिरण, थरमोमीटर, स्टेथस्कोप आदि यंत्रों द्वारा आज रोगनिर्णय करना बहुत ही आसान हो गया ह। हृद्रोगी के रोगग्रस्त हृदय को निकाल कर वहाँ पर किसी दूसरे व्यक्ति के अच्छे हृदय को लगा देने में भी विज्ञान आज सफल निकला है।

विज्ञान के इन आश्चर्यजनक आविष्कारों और उपलब्धियों पर विचार करने पर सब को मालूम हो जाता है कि आधुनिक मनुष्य के लिए विज्ञान एक वरदान है। विज्ञान ने हमारे जीवन में इतना परिवर्तन किया है कि अगर दो सौ वर्ष पूर्व का कोई आदमी फिर से संसार में आ जाए तो वह आवश्य यही समझेगा कि दुनिया स्वर्ग बन गयी है।

हाँ, इस युग में विज्ञान ने अभूतपूर्व उन्नति कर ली है। किन्तु उसी के द्वारा जिन संहारक अस्त्र-शस्त्रों का आविष्कार एवं निर्माण हुआ है उन्हें देखते हुए हमें यह संदेह होने लगता है कि इसे मानव का अभिशाप समझे या वरदान? विज्ञान का उपयोग युद्धों के लिए भी होने लगा है। परमाणु बम और हैड्रजन बम के आविष्कार के बाद इनके प्रयोग से विश्व में कितना बडा नाश हुआ है। इस प्रकार विज्ञान से मनुष्य अपना ही नाश का रहा है।

यह ठीक है कि आधुनिक विज्ञान ने मनुष्य को अनेक सुविधाएँ प्रदान की हैं; किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि उन सुविधाओं से मनुष्य को शान्ति मिली है। मशीनों के प्रचार से यह दुष्परिणाम हुआ है कि मनुष्य की

तन्दुरुस्ती कमज़ोर होती जा रही है। आज वह मशीनों का दास है। विज्ञान से बेकारी भी बढ़ी है। वैज्ञानिक उन्नति के कारण लोगों के रहन-सहन ऊँचे हो गये हैं, किन्तु मनुष्य का नैतिक स्तर गिर गया है।

किन्तु इन सारे नाशों और कष्टों का कारण विज्ञान है, ऐसा कहना भी ठीक नहीं है। विज्ञान एक शक्ति है जिसमें गुण हैं और दोष भी। मनुष्य के बुरे विचार और उद्देश्य ही विज्ञान को विनाशक बना देते हैं।

विज्ञान के दो रूप होते हैं — वरदायिनी रूप और विनाशक रूप। मनुष्य इच्छानुसार इन दोनों में से एक को चुन सकता है।

अतः यदि विज्ञान से विनाश हुआ तो दोष विज्ञान का नहीं, चुननेवाले मनुष्य का है।

युद्ध से जीत नहीं, हार ही होती है

Bimal Vinod Gupta — II B. Com.

यदि युद्ध में किसी की जीत हो, तो भी वह हार के समान है। सुनने में यह विरोधाभास सा लगेगा। लेकिन ज़रा सोचने पर मालूम होगा कि यह सौ प्रतिशत सही है।

यह विजय जो एक देश दूसरे देश के ऊपर प्राप्त करता है, विजय नहीं है। यह वास्तव में दोनों देशों की हार है। मनुष्य इस धरती पर अत्याचार करने नहीं आया। उसको ईश्वर ने अपने मित्र सम्बन्धियों को मारने के लिए नहीं, बल्कि उनके दुख बाँटने के लिए भेजा है। जब मनुष्य आपस में युद्ध करते हैं तो वे अपने निर्माण के लक्ष्य को तोड देते हैं। यही उनकी सब से बडी हार है। इसलिए युद्ध में भले ही कोई देशविजयी निकले, वह विजय केवल तात्कालिक आनंद देगी अंतत: उस विजय का फल दुख, निराशा और नाश ही होगा।

युद्ध के अनेक कारण हो सकते हैं। यदि किसी एक मानव को अपने मित्रों के प्रति दुश्मनी हो तो उसका अर्थ यह नहीं कि वह उनसे लडे और उनपर अपना अधिकार सिद्ध करे। युद्ध के चाहे जितने भी कारण हो, वह ठीक है। शान्ति और समझौते के द्वारा कार्यों को देखने में ही महत्व है।

द्वितीय विश्वमहायुद्ध में अणुशक्ति का प्रयोग किया गया था। जापान के नागसाकी और हिरोशिमा पर अणुबम डाला गया था। इससे उस देश और जनता पर जो धाव पहुँचा वह युगों तक नहीं भरनेवाला है। आज तक विश्व में जितने भी युद्ध हुए सबों से नाश ही हुआ। धन, संपत्ति की नहीं, बल्कि मनुष्यों के प्राणों की भी आहुति की गयी। एक युद्ध से हारनेवाले और जीतनेवाले दोनों पक्षों को क्षति पहुँचती है जिसकी पूर्ति विर्षों के निरन्तर परिश्रम के बाद ही हो सकती है। कभी कभी एक बडे युद्ध के बाद राष्ट्र बीस पचीस वर्ष पिछड जाते हैं। अर्थात अनेक वर्षों का किया कराया कतिपय दिनों के युद्ध में स्वाहा हो जाता है।

यदि दो राष्ट्रों के बीच एक बार युद्ध हो जाए तो भविष्य में भी युद्ध होने की संभावना है। क्यों कि उन देशों के लोगों के मन में परस्पर विरोध, विद्वेष, घृणा और प्रतिशेध की भावना पैदा होती है। शत्रुता एक बार पैदा हो जाए तो वह जल्दी मित्रता में नहीं बदलती। प्रत्येक स्त्री और पुरुष एक दूसरे के भाई-बहन हैं। इस भावना का विनाश हो जाने पर विश्व पर जीवन निस्सार हो जाता हैं।

युद्ध से आर्थिक हानि होती है और आर्थिक अभाव के कारण व्यक्तियों को ठीक तरह से खाना, कपडा आदि नित्योपयोगी चीजें प्राप्त नहीं होतीं। लोगों का साहस भी नष्ट हो जाता है और उनको काम करने की स्फूर्ति नहीं होती। शासकों के प्रति विद्वेष की भावना भी लोगों में पैदा होती है।

युद्ध में अनेक माताएँ मर जाती हैं। अनेक बच्चे अनाथ हो जाते हैं। पतिव्रताओं के सुहाग

मिट जाते हैं और कितनों के हाथ पैर नष्ट हो जाते हैं। कभी कभी घर के एक मात्र पुरुष के युद्ध में मरने से पूरे घर के सदस्य बिलकुल निर्धन और भिखारी बन जाते हैं। इस प्रकार युद्ध की भयंकरताओं को देखकर विजय प्राप्त करने के बाद भी सम्राट अशोक को दुख हुआ था। कलिंग-विजय उनकी दृष्टि में विजय नहीं, हार थी।

अतः हम देखते हैं कि युद्ध से जीत कभी नहीं होती, हार ही होती है। मानव का कर्म है संसार में सुख बाँटना और दूसरों के दुखों को दूर करना। युद्ध से दुख ही होता है, नाश ही होता है, पतन ही होता है और युद्ध के बाद वर्षों के प्रयत्न से ही एक राष्ट्र पूर्वस्थिति में पहुँचता है। अतः यह कहना सर्वथा ठीक है कि युद्ध से जीत नहीं हार ही होती है।

[फारूक कोलेज की 1971-'72 की हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता में यह लेख प्रथम आया।]